माँ जगदम्बा सरस्वती

माँ जगदम्बा का लौकिक जन्म अमृतसर में हुआ। मम्मा के व्यक्तित्व को देखकर ऐसा लगता था कि दिव्य लोक से वसुंधरा पर कोई देवी अवतरित हुई हैं। वे शिष्ट प्रतिभाशालिनी तथा चमत्कारी बुद्धि वाली थीं और लौकिक पढ़ाई में हमेशा प्रथम स्थान लेती थीं। उनकी गायन कला अलौकिक थी तथा स्वर में एक अद्वितीय सुमाधुर्य और दिव्यता थी। मम्मा का लौकिक नाम राधा था।

यज्ञ के प्रति समपूर्ण समर्पणमयता

राधा ने जब बाबा के मुखकमल से सच्चा गीता-ज्ञान सुना तो उनका चित्त इतना आनंदित हुआ कि उन्हें सांसारिक सुख तुच्छ प्रतीत हुए। उन्होंने तुरंत ही जीवन के बारे में निर्णय लिया कि वे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेंगी और स्वयं को सम्पूर्ण रीति से ज्ञानामृत पीने-पिलाने के सर्वोच्च कार्य में लगा देंगी। उन्होंने मन-ही-मन यह निश्चय और अनुभव किया कि यह ईश्वरीय ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने अपने मन की तन, की पूर्ण आहूति यज्ञ में दी अर्थात् सर्वस्व प्रभु-अर्पण किया। इस पुरूषार्थ में वे सभी ब्रह्मा-वत्सों में अद्वितीय व अग्रणी थीं। इससे उनके मन और बुद्धि का संबध पूर्णत: परमात्मा से जुट गया और उनकी बुद्धि का मिलन परमात्मा से हो गया। बाद में ब्रह्मा बाबा ने जब सत्संग का विकसित रूप देखा और परमपिता की करामात देखी तो उन्होंने ओम राधे को इस सत्संग अथवा ईश्वरीय विश्वविद्यालय की अवैतनिक मुखिया नियुक्त किया और अक्टूबर 1973 में ओम राधे के साथ ज्ञाननिष्ठ कन्याओं-माताओं की एक कार्यकारिणी समिति बनाकर अपनी समस्त धन-सम्पत्ति उसे समर्पित कर दी।

ब्र.कु.गंगाधर

आकर्षक थी उनकी वाणी

मम्मा को मधुर व प्रभावशाली वाणी का जन्म से ही ईश्वरीय वरदान प्राप्त था। उनके मुख से जो वरदानी बोल निकलते थे वे सामने वाली आत्मा में अलौकिक परिवर्तन करके ही छोड़ते थे। वे जहाँ भी प्रवचन के लिए जाती थीं तो जनता का हजूम उन्हें सुनने के लिए दौड़ पड़ता था। ऐसी कशिश, ऐसा आकर्षण उनकी वाणी में था। वे सच्चे अर्थों में ज्ञान की गुप्त-देवी थीं।

अजब थी स्मरण शक्ति

मम्मा की स्मरण शक्ति बेमिसाल थी। वे ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में हमेशा त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री स्वरूप दिखाई देती थीं। तीनों कालों की स्मृति उन्हें सदा रहती थी। जिस कारण ही उनके मुख से कभी कोई साधारण बोल नहीं निकलते थे। उनके मधुर बोल में, चाल-चलन में तथा चेहरे पर सदा देवताई स्वरूप की झलक दिखाई देती थी। मम्मा गुरूमुखी भाषा में पत्र लिखती थीं और बहुत थोड़े शब्दों में उत्तर देती थीं।

जगद् जननी का स्वरूप

मम्मा ने अपनी बुद्धि से परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पूरी तरह तल्लीन होकर, बीसों नाखूनों के जोर से प्यारे पिता परमात्मा के गूढ़ ज्ञान को मातृवत् सबको समझाया। तब सभी मनुष्यात्माओं ने उनके अन्दर माँ का दर्शन किया और उनको प्यार से मम्मा की पदवी दी। प्यारे पिता परमात्मा ने भी उनको छोटी उम्र में ही जगदम्बा सरस्वती का अमर वरदान और ओहदा देकर जगत माता, जगद् जननी की पदवी पर बिठा दिया। यह पदवी पाकर भी उन्होंने कभी स्वयं का अभिमान नहीं किया। पिता परमात्मा को ही सदा आगे रखा और बाप को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने हेतु स्वयं को गुप्त ही रखा। पिताश्री ब्रह्मा बाबा पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वालों व वानप्रस्थियों के लिए एक आदर्श उदाहरण हैं तो मम्मा कुमार-कुमारियों के लिए अद्वितीय प्रेरणामूर्त हैं। मम्मा एक साधारण परिवार से आई थीं, स्थूल धन न होते हुए भी ज्ञान-धन की बदौलत वह शिखर पर पहुँच गई।

गजब प्रशासकीय गुण तथा प्रबन्धन क्षमता

मधुबन में जो भी पार्टियाँ आती थीं उनके ठहरने तथा भोजन आदि की व्यवस्था स्वयं मातेश्वरी जी किया करती थीं। उनकी पालना ऐसी मधुर थी कि किसी का भी मधुबन से (शेष पेज 11 पर)

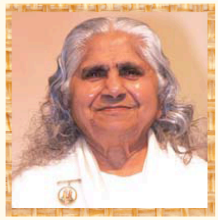
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

नफरत छोड़, निरहंकारी व शांतचित्त बनें

अपने जीवन में उन्नति लाने के लिए, संगठन की शक्ति को बढ़ाने के लिए, साथ-साथ बीती बातों को भुला करके भविष्य ऊँची प्रालब्ध बनाने अर्थ सदा स्व-चिन्तन और प्रभु-चिन्तन में रहेंगे तो व्यर्थ समाप्त हो जायेगा क्योंकि स्व-चिन्तन के बिगर प्रभु-चिन्तन नहीं रह सकता है। पर-चिन्तन और प्रभु-चिन्तन में कितना फर्क है? कहाँ पर-चिन्तन, कहाँ प्रभु-चिन्तन तो बीच में क्या चाहिए? 'स्व-चिन्तन'। स्व-चिन्तन में रहने से योगयुक्त भी रहेंगे क्योंकि बुद्धि प्रभु-चिन्तन में चली जायेगी। बुद्धि पर-चिन्तन से फ्री हो गई। बाबा ने कहा बच्चों में योगबल चाहिए तो हर बात सहज हो जायेगी। अगर बातों का चिन्तन होगा तो बात कठिन होती जायेगी, बाप से मदद मांगते रहेंगे। मदद खींच नहीं सकेंगे। मदद नहीं मिल रही है इसी फीलिंग से उमंग-उत्साह कम हो जायेगा। यह अपने ऊपर थोड़ा तो क्या, पूरा अटेन्शन बहुत आवश्यक है, इसलिए अपने को पर-चिन्तन से फ्री करो।

पर-चिन्तन वैरी है। चाहते हैं याद में रहें लेकिन वह अपने तरफ खींचता है, उन्हें याद में मेहनत लगती है। इसलिए परचिन्तन छोड़ स्व-चिन्तन में रहो, स्व-चिन्तन माना ही 'स्वदर्शन चक्र' फिराना। स्व को अच्छी तरह समझना और स्वरूप में आना फिर बाबा भी देखता है यह बच्चा स्व में रहता है तो मदद देता है। परन्तु चलते-चलते यदि ईर्ष्या, द्वेष आ जाता है तो रेस के बजाय रीस हो जाती है। फिर एक-दो को देखते रहेंगे। जहाँ पहुँचना है वहाँ पहुँचने की रेस नहीं कर सकेंगे। रेस के घोड़े एक-दो को नहीं देखते हैं। और रीस वाले एक-दो को देखते हैं। जो एक-दो को देखते हैं वह बाप को नहीं देख सकते हैं। रेस में दौड़ने वाले बाप को देखते हैं क्योंकि बाप ने हमें दौड़ने के लिए रेस में खड़ा किया है। बाप का नाम बाला हो जाये, यह धुन लगी हुई है मालिक बाबा देख बहुत खुश होता है कि मेरा घोड़ा बहुत अच्छा जा रहा है। कोई भी बात सामने आयी तो घबराओ नहीं, आयी है विदाई लेने के लिए। उसको प्यार से छुट्टी दे दो। थोड़ा भी नर्वस हो जायेंगे, गर्म हो जायेंगे तो वह और बड़ा रूप धारण कर लेगी। और माया के दो रूप खास हैं -एक डराने वाला, दूसरा खींचने वाला, चलायमान करने वाला इसलिए बाबा कहते हैं -निर्भय रहो। तो माया कैसा भी विकराल रूप धारण करे परन्तु हमारे साथ में सर्वशक्तिवान बाप है तो क्या बड़ी बात है। हम तो हैं देह से न्यारे और बाप के प्यारे।

जिसको बाप मिला तो सब कुछ मिला, सदा अन्दर खुशी में हैं तृप्त हैं, संतुष्ट हैं। उसके सामने व्यक्ति, चाहे वैभव कितना भी खींचने वाला रूप धारण करे, उनकी आँख नहीं डूबेगी। अंदर से निश्चय और नशा रहेगा क्योंकि पा लिया जो पाना था, अभी मेरा किसी से भी काम नहीं रहा। तो इस निश्चय और नशे में रहने का आदती बनना है तब ही नैचुरल याद रहेगी। बुद्धि में निश्चय हो कि -मैं ईश्वरीय संतान हूँ। पढ़ाई की भी धारणा अगर है तो उसका भी अभिमान नहीं क्योंकि हमें बाप समान निरहंकारी मीठा बनना है। इसलिए नम्रता भाव को धारण करने से जहाँ भी जाओ तो सफलता मिलेगी। लेकिन निगाहों में किसके लिए भी नफरत है तो वह बाबा का सपूत, सर्विसएबुल बच्चों में नहीं गिना जायेगा। भले वह समझेगा मैं सर्विसएबुल हूँ, सेवा करता हूँ। किसी के प्रति भी सूक्ष्म नफरत की निगाह बड़ी नुकसानकारक है। नफरत की निगाह बाप में भी कभी नफरत ले आयेगी। यह नफरत बहुत खतरे वाली है। सारा दिन एक दो को सुनाते रहेंगे -देखा यह क्या करता है, इसको ऐसे नहीं करना चाहिए। ऐसी बुद्धि जो है, कभी भी खुद शांतचित्त, शीतल स्वभाव वाला, नम्रचित्त बनने नहीं देगी। वह सदा सुखी रहने नही देगी, सदा औरों को सुख देने नहीं देगी। समझदार कभी किसी से नफरत व वैर नहीं रख सकता। नफरत की दृष्टि रूहानियत में रहने नहीं देती। सूक्ष्म नफरत -सच्चे ईश्वरीय स्नेह का अनुभव करने नहीं देगी। अच्छी तरह से न पढ़ने वाले बाबा से प्यार नहीं खींच सकते हैं। श्रीमत को सदा सिर माथे पर रखने वाले बाबा का प्यार खिंचवाते हैं। जितना-जितना अंदर आत्मा अपने आपको चेक करती है और चेन्ज होने की लगन है तो समय भी साथ देता है।

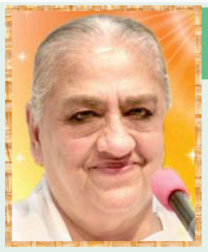
दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

गुण देने वाला तो बाबा है अत: बलिहारी उसकी है

आत्म-अभिमानी स्थिति के लिए मैं ऐसा समझती हूँ कि आत्मा अपने भान में रहे। आत्म-अभिमानी माना आत्मा मालिक होकर इस शरीर की कर्मेन्द्रियों को चलाये, आत्मा अपने पोजीशन में रहे। शरीर तो साथ में है ही जब छूटेगा तब देखेंगे, बाकी आत्मा मालिक होके अपने पोजीशन में रहे और सब कर्म भी हो और स्थिति भी अच्छी हो। मैं समझती हूँ यह 'आत्म-अभिमानी' की स्टेज है। बाबा हमेशा कहते हैं -बच्चे, अपने को आत्मा समझकर परमात्मा से योग लगाओ। तो पहली स्टेज है आत्म-अभिमानी बनना। फिर जो आत्म-अभिमानी की स्टेज में रहते-रहते, साइलेन्स की ऊँची स्टेज में एक परमात्मा की याद में खोये हुए रहते, आत्मा-परमात्मा का जैसे मिलन हो, समानता हो, जिसमें शरीर का भान एकदम जैसे ना के बराबर हो, उस स्थिति को 'अशरीरी अवस्था' कहेंगे। तो अशरीरी बनना माना मैं और बाबा दोनों ही साथ में, मिलन में मगन हैं या समाये हुए हैं। शरीर के भान में होते हुए भी शरीर के भान से जैसे मुक्त हैं। शरीर का भान खींचे नहीं।

बाकी विदेही और कर्मातीत अवस्था -इसमें मैं समझती हूँ कि विदेही अवस्था जो है वो बिल्कुल जैसे देह से परे एकदम परमधाम में बाबा के साथ है, जिसमें इस देह की दुनिया का, साधनों का कुछ भी भान न हो। बिल्कुल परमधाम में आत्मा, परमात्मा के साथ बैठी है बस, उसी में खोई हुई है। तो विदेही अवस्था और कर्मातीत अवस्था में थोड़ी समानता है। कर्मातीत अवस्था विदेही के बहुत नजदीक है, विदेही अवस्था का अभ्यास होगा तो हम कर्मातीत हो जायेंगे, हमारा यह विचार है।

आप सब भाग्यवान हैं जो टाइम पर बाबा के पास पहुँच गये, अभी भी साधना करने का समय है। लेकिन जब हलचल शुरू हो जायेगी तो उस हलचल का सामना करने में भी टाइम देना पड़ेगा। उस समय अभ्यास नहीं होगा तो साधना नहीं कर सकेंगे और हलचल में टिक नहीं सकेंगे इसीलिए बाबा बार-बार भिन्न-भिन्न रूप से इशारा दे रहा है। एक तो कर्म के बंधनों को चेक करो, एकदम मैं क्लीन हूँ? किसी भी तरफ लगाव तो नहीं है? लगाव की निशानी ही है हमारी उस तरफ बीच-बीच में बुद्धि झुकाव में आयेगी, किसी भी रूप से इसको यह करना है, इसके लिए यह करना है, इसको यह मदद करनी है...ड्यूटी आपकी है तो वह भले करो लेकिन हमारी ड्यूटी भी नहीं है, वैसे ही हमारा मन आकर्षित होता है, तो यह रांग है, इसको कहते हैं -'लगाव'। किसी के गुण या स्वभाव के ऊपर भी आकर्षित नहीं होना है। गुण देने वाला तो बाबा है तो आकर्षण बाबा की तरफ होनी चाहिए।

हम सबका मन कहता है कि हम सभी बाबा के समान बन जायें, सबके दिल में यही शुभ आशा वा संकल्प है क्योंकि बाबा समान बनने के बिना न फरिश्ता बन सकते हैं, न देवता बन सकते हैं, इसलिए संगम पर हमको बाबा समान तो बनना ही है। बाबा समान बनने के लिए जो शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा लास्ट में हम सब बच्चों के प्रति तीन शब्द उच्चारे थे, निराकारी, निर्विकारी एवं निरहंकारी। शिव बाबा है निराकार और हम साकार में हैं। अगर हमें निराकारी स्टेज तक पहुंचना है तो बाबा ने जो कहा है वह बनना ही है, करना ही है यह लगन हो। जैसे अमृतवेले उठकर बाबा से रूहरिहान करते हैं। हमारा यह ब्राह्मण जन्म, नया जन्म है। इसमें बाबा ने यही अटेंशन खिंचवाया है कि तुम अपने को अवतार समझो। जैसे मैं ऊपर परमधाम से इस शरीर में अवतरित हुई हूँ कार्य करने के लिए। तो अवतार हूँ, माना कहां से अवतरित हुई हूँ। तो अपना परमधाम, निराकार धाम याद आयेगा। हम आत्माएं भी तो निराकार हैं और हमारा घर भी परमधाम है।